अक्ल बड़ी या भैंस!

एकलव्य का प्रकाशन

अक्ल बड़ी या भैंस!

प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम समूह द्वारा भाषा शिक्षण के लिए संकलित लोककथाएँ

एकलव्य का प्रकाशन

कविता और कहानी...

...में कई अन्तर हैं। कहानी को कविता की तरह शब्दशः कहना ज़रूरी नहीं है। यानी, उसे उसी तरह सुनाना ज़रूरी नहीं है जैसी वह लिखी गई है।

इस संग्रह की कहानियों को पढ़ने के बाद उन्हें अपने शब्दों में, अपनी शैली में बच्चों को सुनाएँ। सुनाते वक्त ध्यान रहे कि बच्चों के सामने पात्रों व घटनाओं का एक जीवन्त चित्र उभर पाए।

कहानी सुनाने के कई तरीके हैं। कहा नहीं जा सकता कि कौनसा तरीका अच्छा है, कौनसा नहीं। बस इतना ज़रूर है कि कहानी सुनने में बच्चों को मज़ा आना चाहिए। कहानी हावभाव सहित सुनाएँ ताकि लोमड़ी, मुर्गा, चूहा... यानी कहानी के पात्र कहानी में ही नहीं बल्कि कक्षा में ,बच्चे के जीवन में भी घुस आएँ।

कहानी कहने के बारे में कुछ सुझाव...

* कहानी कहते समय बच्चे आपके नज़दीक बैठे हों। ऐसी नज़दीकी जो उन्हें नानी/दादी की गोद की याद दिला दे।
* कोशिश करें कि बच्चों की भाषा के कुछ शब्दों और वाक्यों का उपयोग बार-बार हो। खासकर जहाँ कोई वाक्य या शब्द कहानी में बार-बार आए, जैसे "शलजम" कहानी में, "पोती ने थामा दादी को, दादी ने थामा दादा को" आदि। (बच्चों की भाषा के शब्द जानने के लिए शाला के बड़े बच्चों का सहयोग लें।)
* रोचकता बढ़ाने और बच्चों का कहानी से जुड़ाव बनाए रखने के लिए तरह-तरह के सवाल पूछे जा सकते हैं, ध्वनियों और पात्रों के हावभाव की नकल करने को कहा जा सकता है, घटनाक्रम में आगे क्या हुआ होगा बूझने के लिए कह सकते हैं। और तत्काल सुझाई गई दिशा में कहानी आगे बढ़ाई जा सकती है।

  पर ध्यान रहे कि सवाल कब और कैसे पूछे जाएँ, यह कुछ टेढ़ा मामला है। कभी-कभी सवाल पूछने से कहानी का क्रम टूट जाता है, मज़ा बिगड़ जाता है।
* कहानी सुनाते समय उससे सम्बन्धित चित्र भी साथ-साथ दिखाएँ। इससे बच्चों को मज़ा तो आएगा ही, ध्यान देने में भी आसानी होगी।
* बच्चों में लम्बे समय तक एक ही बात पर ध्यान देने की क्षमता कम होती है। आपकी कहानी सभी बच्चे अन्त तक पूरी रोचकता से सुनें, यह अपेक्षा करना सही न होगा। कहानी की लम्बाई आप अपनी कक्षा के बच्चों के अनुसार ही तय करें। चित्र दिखाएँ, हावभाव के साथ सुनाएँ, बच्चों की भागीदारी बढ़ाएँ, ध्यान रखें कि कहानी अधिक लम्बी न हो।
* कई अच्छी कहानियाँ काफी लम्बी होती हैं। इन्हें आप टुकड़ों में सुना सकते हैं। आज पहला भाग, कल अगला, फिर तीसरा - एक धारावाहिक की तरह। इससे बच्चों में आगे जानने की जिज्ञासा बनी रहेगी। ऐसा कुछ बड़े बच्चों के साथ ही किया जा सकता है जिन्हें क्रम में सुनने और याद रखने की आदत हो गई हो। पहली और दूसरी कक्षा के लिए छोटी कहानियाँ ही उपयुक्त रहेंगी। शाला में रोज़ लगभग

आधा घण्टा कहानी के लिए दिया जा सकता है।

* जब बच्चे कहानी सुनने के आदी हो जाएँ तब कहानियाँ पुस्तकों में से पढ़कर भी सुनाई जा सकती हैं।
* कहानियाँ सुन-सुनकर बच्चे धीरे-धीरे कहानी कहने भी लगेंगे। पहले अनौपचारिक रूप से अपने साथियों को सुनाएँगे, फिर सामूहिक रूप से पूरी कक्षा को भी सुना सकते हैं। बच्चों को अपनी ही बोली (गोण्डी, कोरकू, निमाड़ी आदि) में कहानी सुनाने दें। इससे उनमें कक्षा में कुछ बोलने का विश्वास बढ़ेगा। शुरू में बच्चे पूरी कक्षा के सामने कहानी कहने से कतराएँगे। उन पर दबाव न डालें। ना ही उनकी गलतियाँ सुधारने पर ज़ोर दें। उन्हें हावभाव के साथ बोलने को प्रोत्साहित करें।
* कहानी सुनने और कहने से बच्चों को अपने आपको विभिन्न पात्रों में ढालने का और काल्पनिक स्थितियों में विचरने का मौका मिलता है। पहले तो बच्चे सिर्फ कुछ पात्रों की विशेषताओं की नकल करते हैं जैसे उनकी चाल आदि की। उदाहरण के लिए भालू कैसे चलता है, बकरी कैसे बोलती है, राजा किस तरह गुस्सा होता है, चिड़िया फुर्र से कैसे उड़ गई आदि। फिर कुछ स्थितियों की नकल भी करते हैं, जैसे गोल-मटोल मुर्गा लोमड़ी से डरकर कैसे धप्प से गिरा; मीनू ने मगर से अपनी गागर लेने की कोशिश कैसे की; छुटनक्कू और बड़नक्कू का सिर कैसे टकराया। धीरे-धीरे वे पूरी कहानी का अभिनय कर पाएँगे।
* इस पूरी प्रक्रिया में काफी समय लगता है। कक्षा पहली के अन्त तक तो कुछ ही बच्चे अभिनय के साथ कहानी सुना पाएँगे। अधिकांश बच्चे तीसरी या चौथी कक्षा तक ही इसमें सक्षम हो पाएँगे। इसलिए कहानी सुनने-सुनाने की प्रक्रिया पूरी प्राथमिक शाला में जारी रखें।
* कहानी के पात्रों का अभिनय करना एक स्वाभाविक दिशा है। यह मौखिक अभिव्यक्ति के विकास का एक सशक्त माध्यम है। बच्चों की झिझक तोड़ने व उन्हें बोलने हेतु प्रोत्साहित करने का यह एक सहज तरीका है।
* पढ़ने की तैयारी कराने और फिर पढ़ने के लिए कहानी का उपयोग बखूबी किया जा सकता है। कहानी में बार-बार आने वाले वाक्यों व शब्दों को पट्टी पर लिख लें। बच्चों से शब्द और फिर अक्षर पहचानने के अभ्यास कराए जा सकते हैं।
* बच्चे भाषा और पढ़ना सीखना किसी सन्दर्भ में ही करते हैं। कहानी अपने आप में इस उद्देश्य के लिए एक रोचक सन्दर्भ है। कहानी सुनाते-सुनाते आप बीच में रुक जाएँ ताकि बच्चे आगे का शब्द/वाक्य पूरा करें। (जैसे, किसान बोला, "मैं जड़ें बेचने...") इस तरह बच्चे कहानी का सन्दर्भ समझकर वाक्य बनाएँगे। इससे धीरे-धीरे पढ़ने-लिखने के कौशल विकसित हो पाएँगे।
* कई महत्वपूर्ण अवधारणाएँ कहानी का सहज हिस्सा होती हैं (जैसे बड़ा-छोटा, दूर-पास, मोटा-पतला आदि) और बच्चे इन्हें कहानी के माध्यम से खूब पकड़ते हैं। कहानी के सन्दर्भ से इनका एहसास होता है और अभिनय से उनका अर्थ और स्पष्ट हो जाता है। ऐसी कुछ कहानियाँ इस संग्रह में दी गई हैं। आप ऐसी और कहानियाँ ढूँढ या बना सकते हैं।

कहानी सुनते-सुनाते-पढ़ते बच्चे नई कहानियाँ बनाने भी लगेंगे। इस संग्रह की कहानियों पर टिप्पणी और

1.	तोता और चने की दाल	5
2.	किसान और भालू	8
3.	शलजम	10
4.	अक्लमन्द बकरी	12
5.	चिड़िया और राजा	17
6.	देहाती चूहा, शहरी चूहा	18
7.	अक्ल बड़ी या भैंस!	22

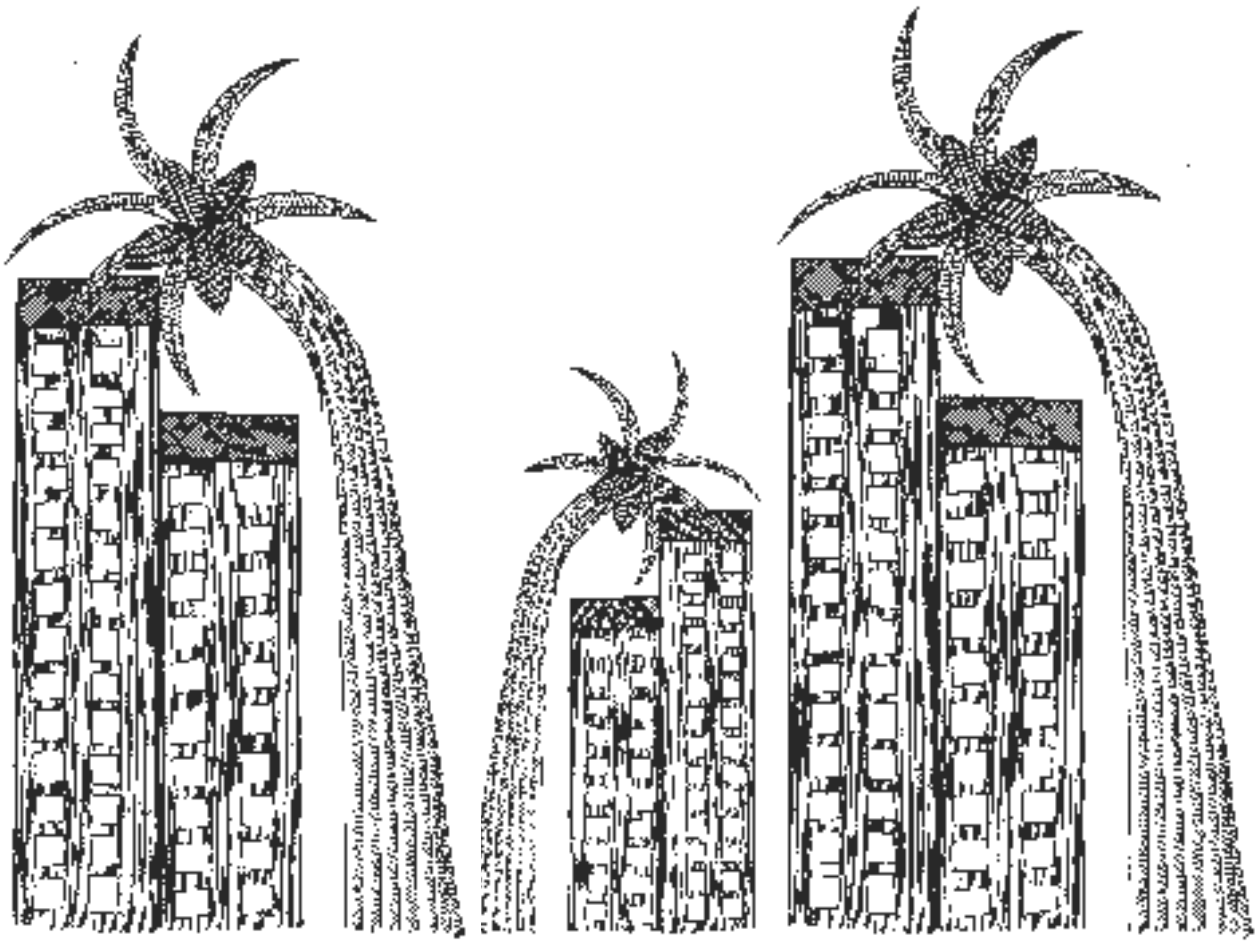

1. तोता और चने की दाल

एक बार एक तोता शहर घूमने जा रहा था। उसे एक जगह खूँटे पर एक चना मिला। उसे देखकर तोता तुरन्त चना फोड़ने लगा। चने की एक दाल खूँटे में घुस गई। दूसरी को तोता खा गया। फँसी हुई दाल को निकलवाने के लिए तोता बढ़ई के पास पहुँचा और बोला, "आप खूँटा चीरकर दाल निकाल दीजिए।"

बढ़ई बोला, "क्या मैं तुम्हारा चाकर हूँ कि दाल निकालूँ।"

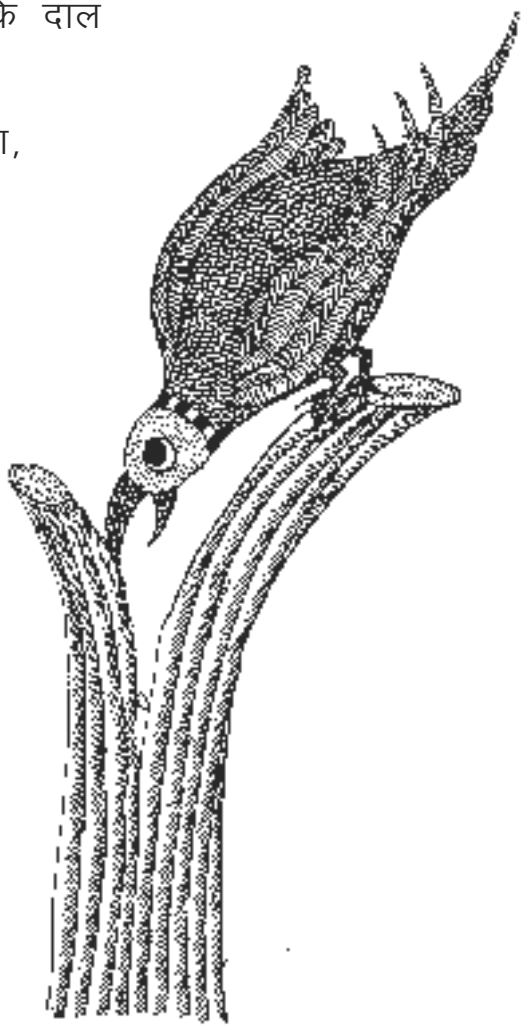

तोता राजा के पास गया और राजा से बोला, "आप बढ़ई को मारें।"

राजा बोला, "मैं कोई तुम्हारा चाकर हूँ कि बढ़ई को मारूँ।"

तोता रानी के पास गया और बोला, "रानी तुम राजा को छोड़ दो तो राजा बढ़ई से दाल निकालने के लिए कहे।"

रानी बोली, "तू भाग यहाँ से।"

फिर तोता साँप के पास पहुँचा और बोला, "तुम रानी को डसो।"

साँप बोला, "भाग यहाँ से।"

तोता वहाँ से भागा और लाठी से बोला, "तुम साँप को मारो, फिर वह रानी को डसे, रानी राजा को छोड़ दे तो राजा बढ़ई को मारे तो बढ़ई दाल निकाले।"

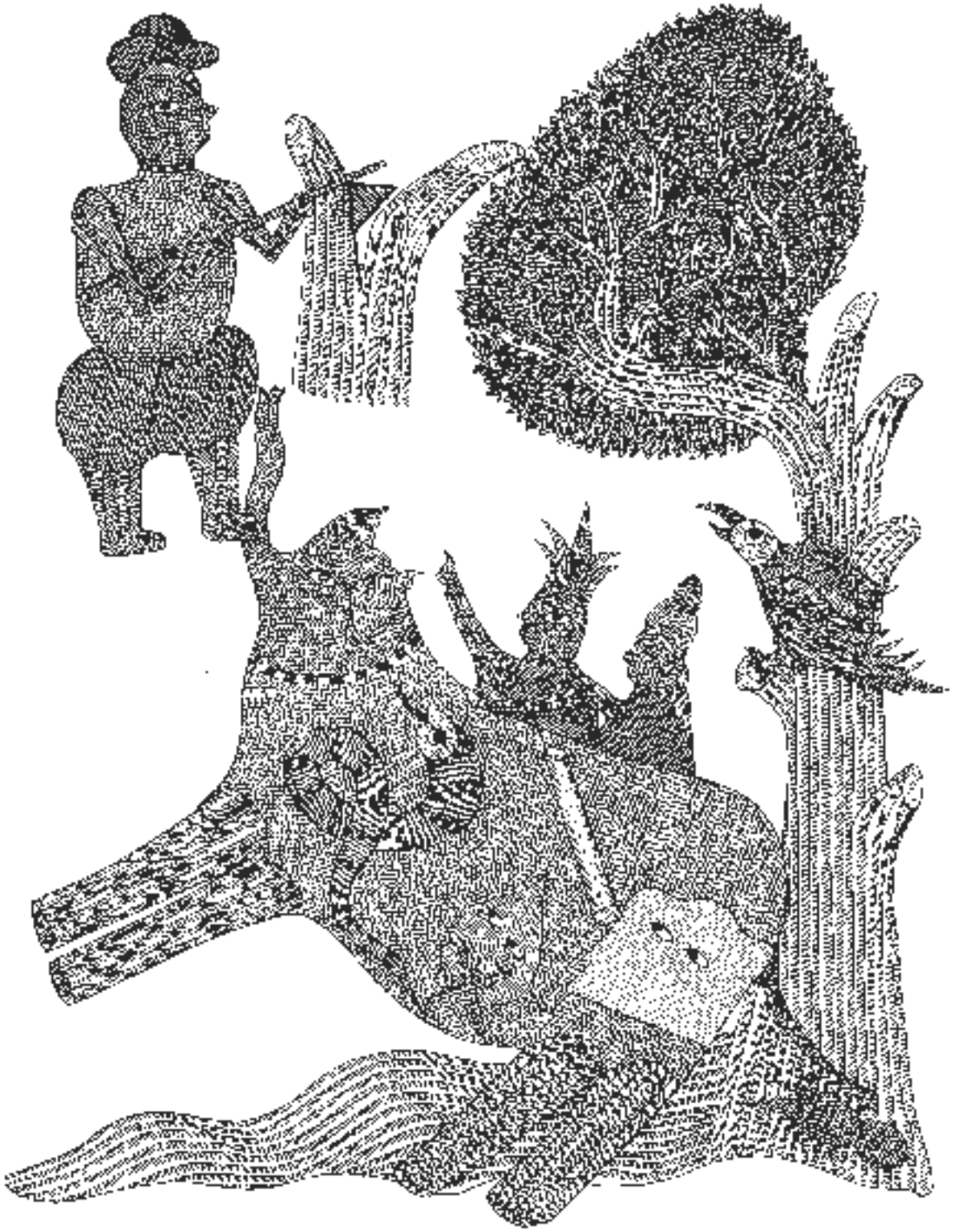

तब लाठी बोली, "जा, भाग यहाँ से।"

तब तोता आग के पास गया और उससे बोला, "लाठी को जलाओ।" आग ने भी उसको भगा दिया।

तब तोता पानी के पास गया और बोला, "तुम आग को बुझाओ।" पानी ने भी तोते को भगा दिया।

फिर तोता हाथी के पास गया और बोला, "पानी को सोख लो।"

हाथी ने कहा, "मुझसे नहीं होगा," और उसे भगा दिया।

तोता तब चींटी के पास गया और बोला, "चलो हाथी को चाबो।" चींटी चली हाथी को चाबने।

तब हाथी बोला, "चींटी बहन तुम मुझे मत चाबो, मैं पानी सोखने जाता हूँ।"

तब पानी बोला, "हाथी भैया तुम मुझे मत सोखो, मैं आग बुझाने जाता हूँ।"

तब आग बोली, "पानी तुम मुझे मत बुझाओ, मैं लाठी जलाने जाती हूँ।"

लाठी बोली, "आग तुम मुझे न जलाओ, मैं साँप मारने जाती हूँ।"

साँप बोला, "तुम मुझे मत मारो, मैं रानी को डसने जाता हूँ।"

रानी बोली, "तुम मुझे न डसो, मैं राजा को छोड़ देती हूँ।"

राजा बोला, "रानी तुम मुझको मत छोड़ो, मैं बढ़ई को कहने जाता हूँ।"

राजा ने बढ़ई से कहा, "जाओ खूँटे को चीरकर दाल निकाल दो।" बढ़ई ने खूँटा चीरा और दाल निकाल दी। तोता दाल खाकर शहर चला गया।

2. किसान और भालू

एक किसान आलू बोने के लिए जंगल गया। वह हल चला ही रहा था कि वहाँ एक भालू आ गया। भालू ने कहा, "किसान, मैं तेरी हड्डी-पसली तोड़ डालूँगा।"

"नहीं, ऐसा नहीं करो, प्यारे भालू। इसकी बजाय, आओ, हम मिलकर आलू बोएँ। मैं उसकी जड़ें ले लूँगा और तुम्हें उसके पत्ते दे दूँगा।" भालू बोला, "ठीक है। अगर धोखा दोगे, तो फिर कभी भूलकर भी जंगल में पैर नहीं रखना।"

कुछ समय बाद खूब बड़े-बड़े आलू पैदा हुए। पतझड़ में किसान उन्हें निकालने के लिए आया। उसी वक्त भालू भी जंगल से निकलकर सामने आ गया और बोला, "किसान, आओ, आलू की फसल बाँट लें। मेरा हिस्सा मुझे दे दो।"

"अच्छी बात है, बाँट लेते हैं, प्यारे भालू! ये रहे तुम्हारे पत्ते और ये रही मेरी जड़ें।" किसान ने भालू को सारे पत्ते दे दिए और आलुओं को घोड़ा-गाड़ी में लादकर बेचने चल दिया।

रास्ते में भालू फिर मिला। "किसान तुम कहाँ जा रहे हो?" भालू ने पूछा।

"प्यारे भालू, मैं जड़ें बेचने के लिए शहर जा रहा हूँ।" किसान ने जवाब दिया। "एक जड़ तो दो, मैं चखकर देखूँ।" भालू बोला।

किसान ने उसे एक आलू दिया। भालू ने उसे खाया और गुस्से से गरजते हुए बोला, "अरे किसान, धोखा दिया है तुमने मुझे। अब तुम लकड़ी काटने के लिए जंगल में नहीं आना, नहीं तो हड्डी-पसली तोड़ दूँगा।"

अगले साल किसान ने उसी जगह पर गेहूँ बोया। वह फसल काटने आया, तो भालू को वहाँ खड़ा पाया। "अब तू मुझे धोखा नहीं दे पाएगा, किसान। दे मेरा हिस्सा," भालू बोला। किसान बोला, "ऐसा ही सही। प्यारे भालू, तुम ले लो जड़ें और मैं पत्ते ही ले लेता हूँ।"

दोनों ने फसल बटोरी। किसान ने भालू को जड़ें दे दीं और गेहूँ को घोड़ा-गाड़ी में लादकर घर ले गया। भालू जड़ों को चबाता रहा, मगर चबा न पाया। वह किसान से बेहद नाराज़ हो गया। तभी से भालू और किसान के बीच दुश्मनी चली आ रही है।

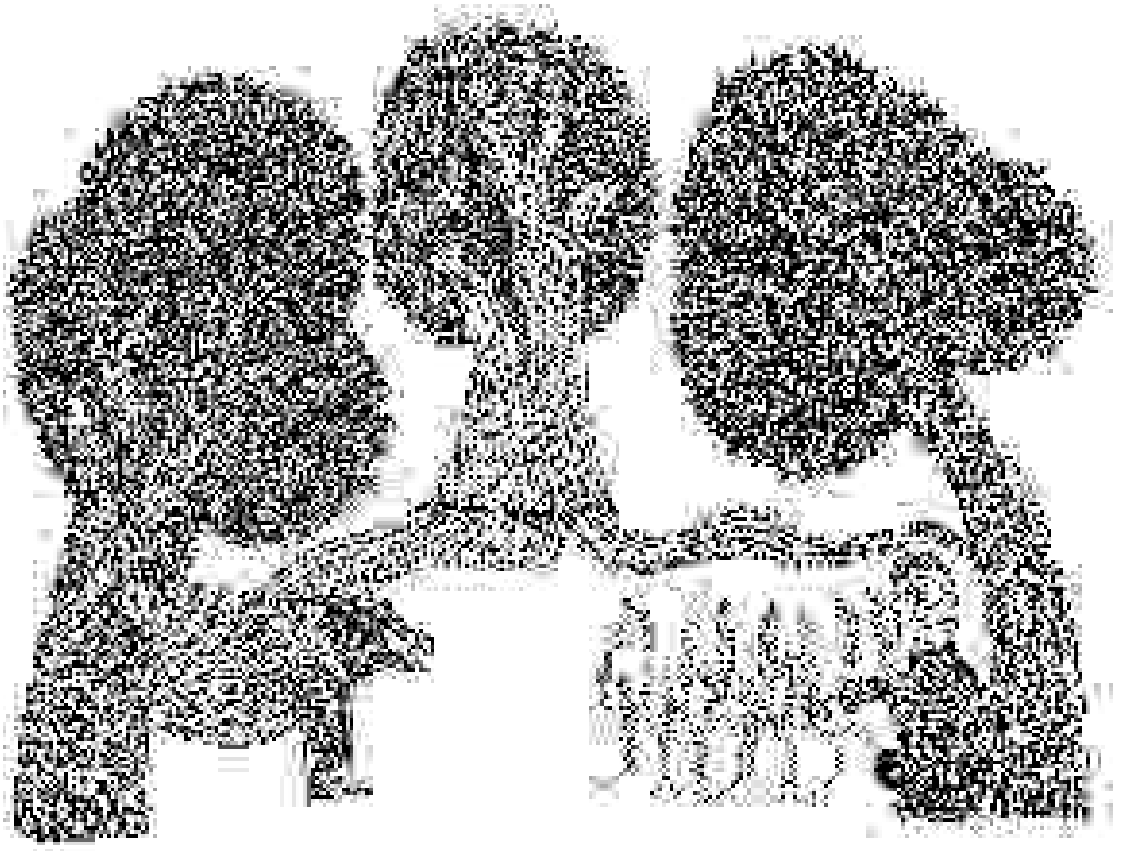

3. शलजम

क बूढ़े ने शलजम बोया और कहा, "उगो-उगो, शलजम, मीठे बनो। उगो-उगो, शलजम, मज़बूत बनो।"

तो उग आया मीठा-मीठा, बहुत ही बड़ा शलजम। बूढ़ा उसे निकालने के लिए गया। वह उसे खींचता रहा, अपना पूरा ज़ोर लगाकर खींचता रहा, मगर शलजम को निकाल न पाया। तो उसने बुढ़िया को बुलाया।

बुढ़िया ने थामा बूढ़े को,
बूढ़े ने थामा शलजम को।

दोनों उसे खींचते रहे, अपना पूरा ज़ोर लगाते रहे, मगर शलजम को निकाल न पाए। अब बुढ़िया ने पोती को बुला लिया।

पोती ने थामा दादी को,
दादी ने थामा दादा को,
दादा ने थामा शलजम को।

सभी मिलकर उसे खींचते रहे, पूरा ज़ोर लगाते रहे, मगर शलजम को निकाल न पाए। तब पोती ने बुलाया अपने कुत्ते को।

कुत्ते ने थामा पोती को,
पोती ने थामा दादी को,
दादी दे थामा दादा को,
दादा ने थामा शलजम को।

सभी मिलकर उसे खींचते रहे, अपना पूरा ज़ोर लगाते रहे, मगर शलजम को निकाल न पाए। फिर कुत्ते ने बुला लिया बिल्ली को।

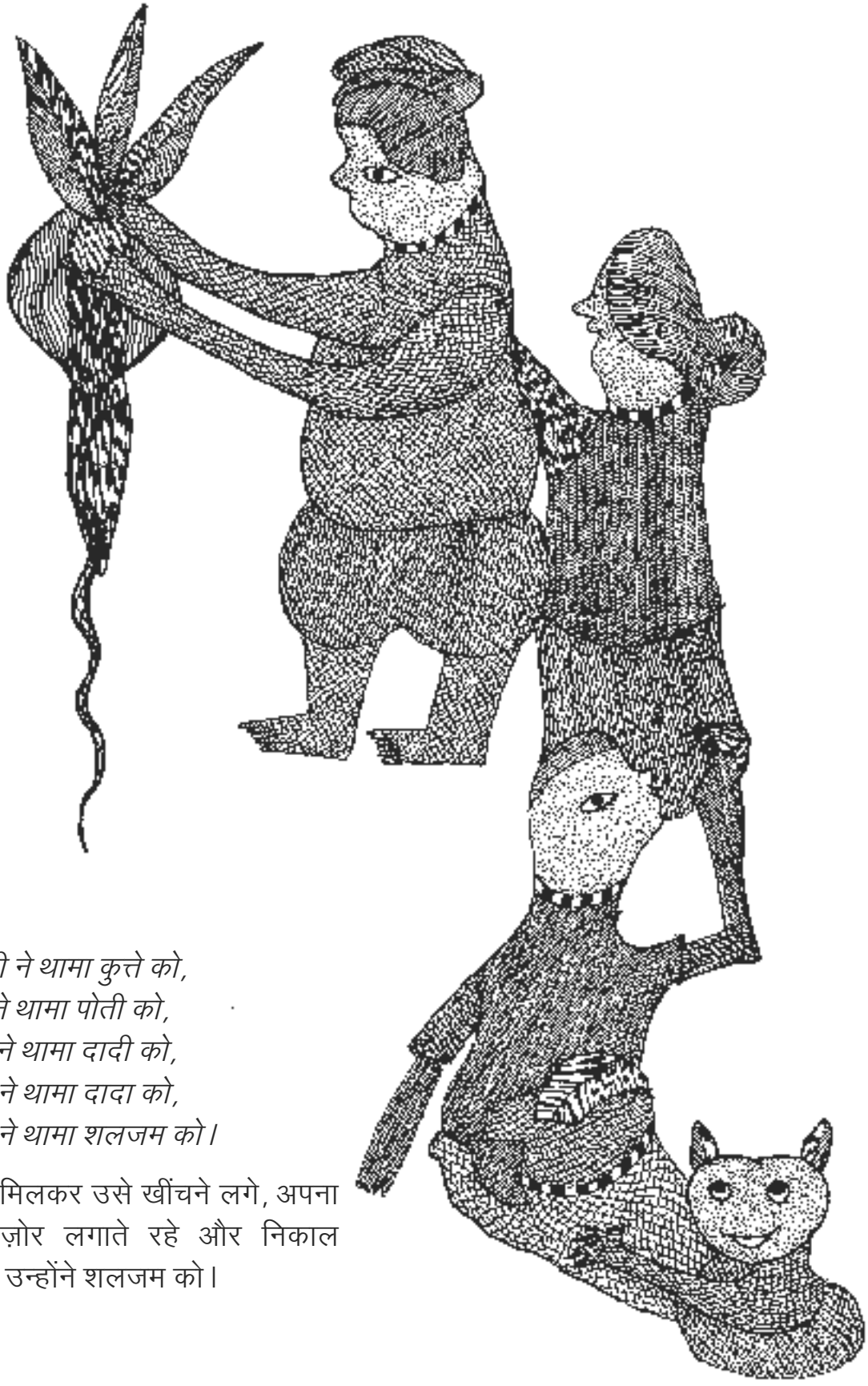

बिल्ली ने थामा कुत्ते को,
कुत्ते ने थामा पोती को,
पोती ने थामा दादी को,
दादी ने थामा दादा को,
दादा ने थामा शलजम को।

सभी मिलकर उसे खींचने लगे, अपना पूरा ज़ोर लगाते रहे और निकाल लिया उन्होंने शलजम को।

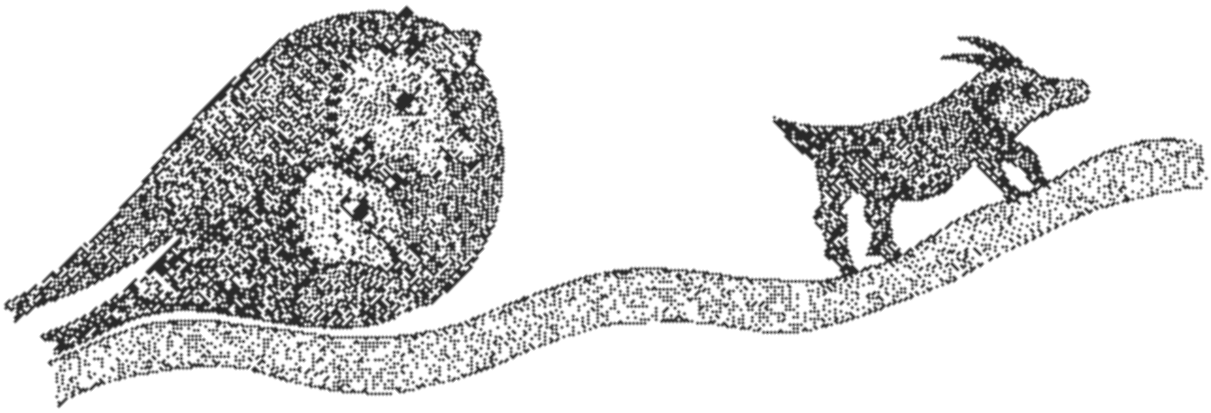

4. अक्लमन्द बकरी

क पहाड़ की गुफा में जंगली बकरियों का एक झुण्ड रहता था। उस गुफा के नीचे एक दूसरी गुफा में सियारों का एक जोड़ा रहता था। जब भी कोई बकरी झुण्ड से अलग होती तो सियार उसे मारकर खा जाते।

झुण्ड की सरदार बकरी ने देखा कि बकरियाँ कम होती जा रही हैं। उसने सोचा ज़रूर दुष्ट सियार उन्हें मारकर खा रहे होंगे। मैं अपनी बकरियों को सावधान रहने के लिए कहूँगी।

उसने बकरियों को बुलाकर कहा, "अकेले बाहर मत जाया करो नहीं तो वे चालाक सियार तुम्हें खा जाएँगे। तुम लोग झुण्ड में ही बाहर निकला करो।"

बकरियों ने अपनी सरदार की चेतावनी पर खूब ध्यान दिया। वे सदा झुण्ड में घूमने लगीं। इससे सियार अब उनमें से किसी को भी मार नहीं पा रहे थे। नर सियार समझ गया कि बकरियाँ अपनी सरदार के कारण ही इतनी सावधान और चौकस रहती हैं। वह अपनी पत्नी से बोला, "जब तक यह सरदार बकरी है हम किसी बकरी को मारकर खा नहीं सकते। हमें किसी तरह से उसे ही मार डालना चाहिए।

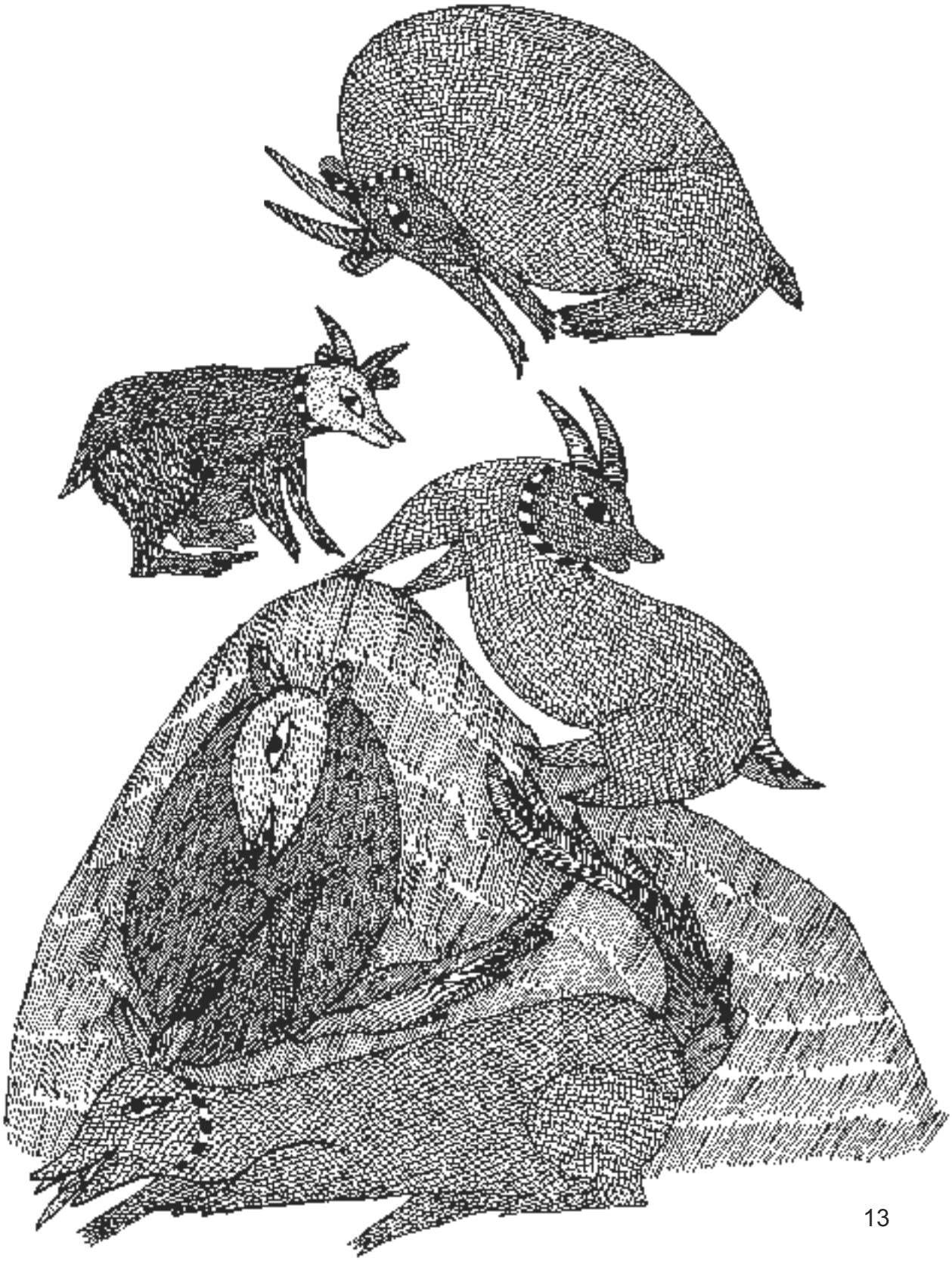

मेरे पास एक तरकीब है मगर उसमें मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए।"

मादा सियार ने पूछा, "मैं तुम्हारी क्या मदद करूँ?"

"तुम सरदार बकरी से दोस्ती कर लो। फिर उससे कहो कि मैं मर गया हूँ और मुझे मिट्टी में दबाने के लिए तुम्हें उसकी मदद चाहिए। फिर तुम उसे यहाँ ले आना। जैसे ही वह गुफा में घुसेगी मैं उस पर झपट पड़ूँगा और उसे मार डालूँगा।"

मादा सियार इन सब बातों से सहमत हो गई। पहाड़ की ढलान पर जाकर उसने सरदार बकरी से दोस्ती कर ली। कुछ दिन बाद मादा सियार ने बकरी से कहा, "एक बुरी खबर है। पिछली रात नर सियार अचानक मर गया। मुझे बहुत अकेलापन महसूस हो रहा है। ऐसा कोई भी नहीं है जो मेरी मदद करे। केवल तुम ही मेरी सखी हो। क्या तुम उसका शरीर मिट्टी में दबाने में मेरी सहायता करोगी?"

बकरी ने कहा, "सखी, मुझे तुम्हारे नर सियार से अब भी डर लगता है। मैं तुम्हारी गुफा में नहीं
जा सकती।"

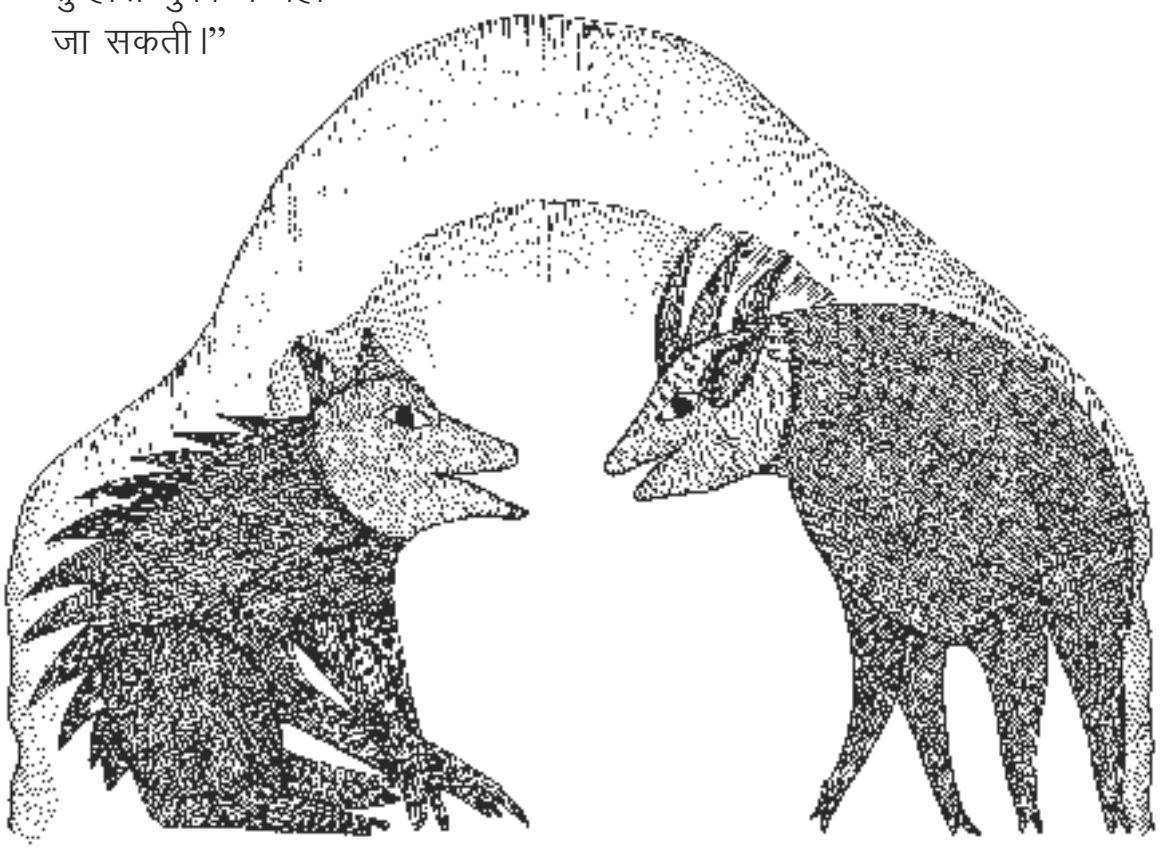

“डरो मत।” मादा सियार बोली, “मरा हुआ सियार तुम्हारा क्या बिगाड़ सकता है? कृपाकर मेरी मदद करो।”

बहुत कहने पर बकरी मादा सियार के साथ जाने के लिए तैयार हो गई। लेकिन उसे शक था, इसलिए उसने सोचा कि वह पूरी सावधानी बरतेगी। उसने गुफा का रास्ता दिखाने के लिए मादा सियार से आगे-आगे चलने को कहा।

मरने का बहाना कर लेटे हुए नर सियार ने जब पैरों की आहट सुनी तो वह अधीर हो उठा। उसने ज़रा-सा सिर उठाया और एक आँख से देखा।

बकरी पहले से ही चौकस थी। उसने यह सब देख लिया। वह मुड़ी और वहाँ से भाग गई। मादा सियार उसके पीछे-पीछे भागी और उसे वापस आने के लिए कहने लगी। लेकिन बकरी ने सीधे घर पहुँचकर ही साँस ली।

मादा सियार वापस अपनी गुफा में आ गई। नर सियार ने उससे पूछा, "अब क्या करें? बकरी को फिर से यहाँ कैसे लाएँ?"

"मैं उसे वापस लाने की कोई न कोई तरकीब निकाल ही लूँगी।" यह कहकर मादा सियार फिर बकरी के पास पहुँची।

उसने बकरी से कहा, "तुम्हारा हमारे घर आना तो वरदान साबित हुआ। मेरा सियार जीवित हो गया। हम बहुत खुश हैं और चाहते हैं कि आज रात तुम हमारे साथ दावत खाओ।"

बकरी को पता था कि इन सियारों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है। उसने सोचा कि इन दोनों को इतनी आसानी से नहीं छोड़ना चाहिए। इन्हें ऐसा पाठ पढ़ाना चाहिए जो इन्हें उम्र भर याद रहे।

उसने मादा सियार से कहा, "मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई कि तुम्हारा सियार जीवित है। शाम को मैं ज़रूर दावत खाने आऊँगी और मेरा एक साथी भी मेरे साथ आएगा।"

मादा सियार ने पूछा, "तुम्हारे साथ कौन आएगा?"

बकरी ने उत्तर दिया, "एक शिकारी कुत्ता। यहाँ का सबसे बड़ा शिकारी कुत्ता। आज रात तुम हमारी राह ज़रूर देखना।"

यह सुनकर मादा सियार बहुत डर गई। वह भागी-भागी अपनी गुफा में पहुँची और नर सियार से बोली, "चलो यहाँ से तुरन्त भाग चलें।"

अपनी जान बचाने के लिए दोनों वहाँ से भाग गए और फिर कभी उस गुफा में नहीं आए।

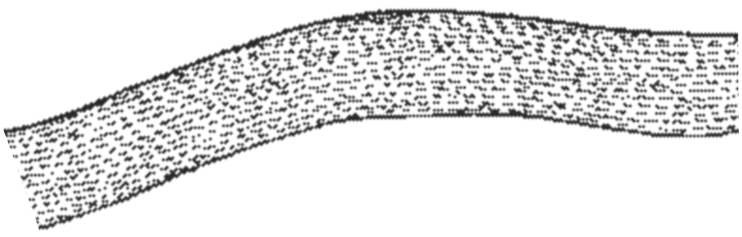

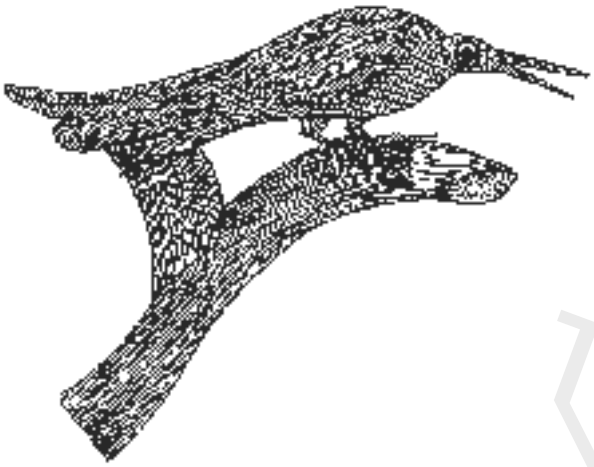

5. चिड़िया और राजा

एक चिड़िया को कहीं से एक मोती मिला। चिड़िया ने उसे अपनी नाक में पहन लिया। फिर वह राजा के महल पर जा बैठी और गाने लगी, "मैं राजा से बड़ी, मेरी नाक में मोती।"

यह सुनकर राजा को बहुत गुस्सा आया। उसने अपने आदमियों से कहा, "चिड़िया का मोती छीन लाओ।" उन्होंने जाकर झट से चिड़िया से मोती छीन लिया। अब चिड़िया पहले वाला गाना छोड़कर दूसरा गाना गाने लगी, "राजा भिखारी, मेरा मोती छीन लिया।"

यह गीत सुनकर राजा बड़ा शरमाया। उसने चिड़िया को उसका मोती लौटा दिया। मोती मिलने पर चिड़िया ने एक और नया गीत शुरू किया, "राजा तो डर गया, मेरा मोती दे दिया।"

यह गीत सुनकर राजा गुस्से से लाल हो गया। उसने चिल्लाकर कहा, "पकड़ लाओ इस बदमाश चिड़िया को।" उसके आदमी चिड़िया को पकड़ने के लिए दौड़े मगर चिड़िया फुर्र से उड़ गई।

राजा हाथ मलता रह गया।

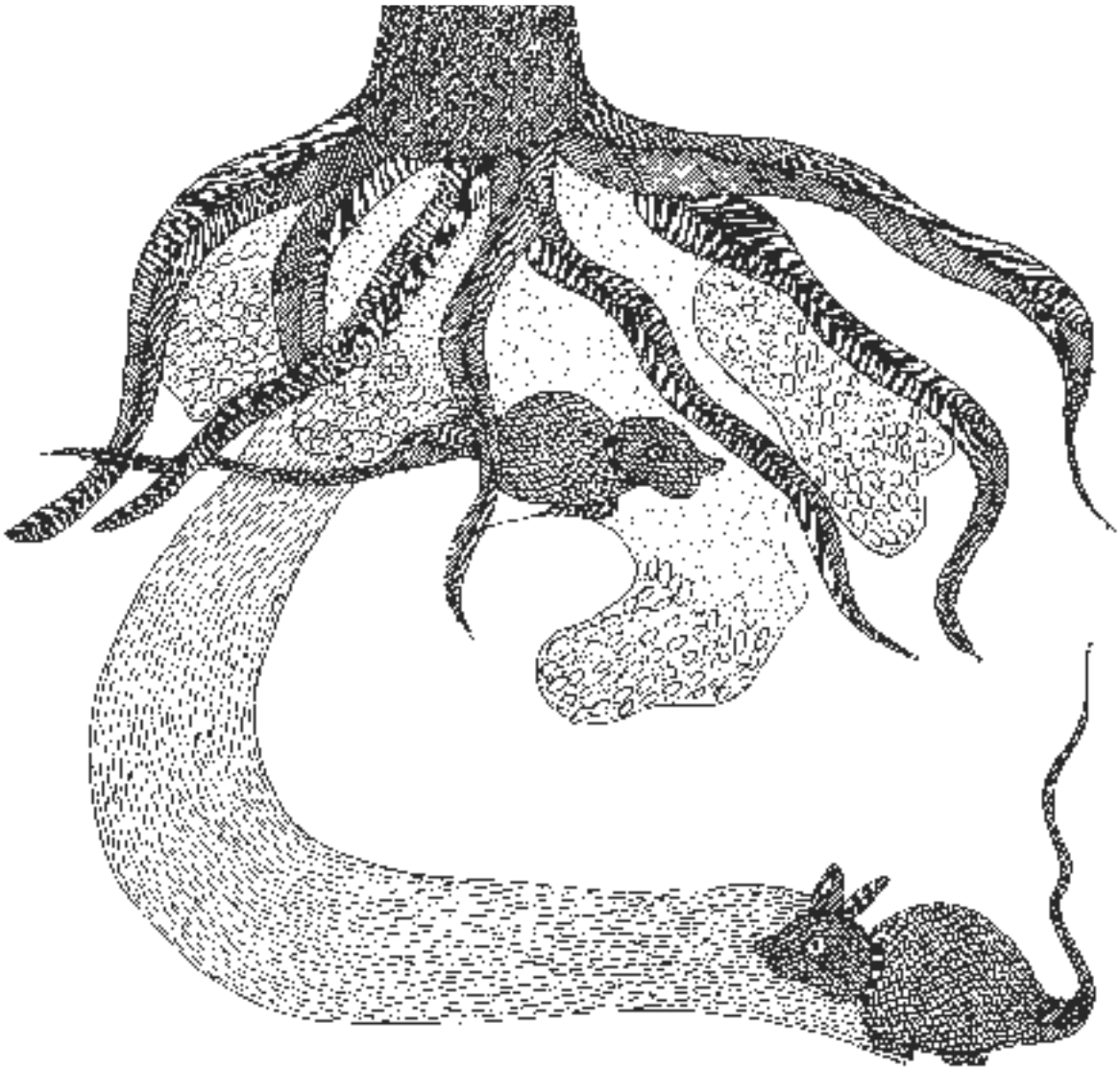

6. देहाती चूहा, शहरी चूहा

एक छोटा-सा चूहा देहात में रहता था। उस बेचारे जीव के लिए जीना सरल न था। उसे भुट्टे, जौ, बीज के लिए काफी भाग-दौड़ करनी पड़ती थी। इन्हें वह अपने भण्डार में सर्दियों के लिए दबाकर रखता था। सर्दियों में उसे अपना बिल पेड़ के नीचे खोदना पड़ता था और पत्तों से अपने आपको ढँकना पड़ता था। लेकिन उसके खाने के लिए पर्याप्त सामग्री थी व सोने के लिए आरामदेह खेत था। वह इस वातावरण में बहुत खुश था।

एक दिन देहाती चूहे ने अपने भण्डार की तरफ देखा। वह पूरा भर गया था। उसने सोचा कि उसके पास खाने को पर्याप्त है और मौसम भी अच्छा है। क्यों ना अपने चचेरे भाई, शहरी चूहे को बुलाकर कुछ समय के लिए अपने साथ रखा जाए। वह देहात में अपनी छुट्टियाँ अच्छी तरह से बिता सकेगा।

शहरी चूहा कुछ दिनों बाद आया। दोनों भाइयों के पास बात करने के लिए बहुत कुछ था। वे काफी समय से आपस में नहीं मिल पाए थे। लेकिन जब देहाती चूहे ने रात का भोजन परोसा तो शहरी चूहा उदास हो गया।

"क्या तुम्हारे पास खाने के लिए सिर्फ दाने, जौ और सूखे फल ही हैं? मेरा ऐसी दावत खाने का बिलकुल विचार नहीं था।"

देहाती चूहा कुछ न बोला। रात को वे पेड़ के नीचे नम घास पर सोए। दूसरे दिन सुबह शहरी चूहा काँपता हुआ उठा और बोला, "यह तुम्हारा आराम करने का अच्छा ढंग है। मैं जमने की हद तक ठण्डा हो गया हूँ। रात में ठीक से आँख तक नहीं झपकी।"

देहाती चूहे ने कहा, "मुझे खेद है।"

लेकिन शहरी चूहे ने बात को उदारता से लिया और कहा, "अफसोस मत करो

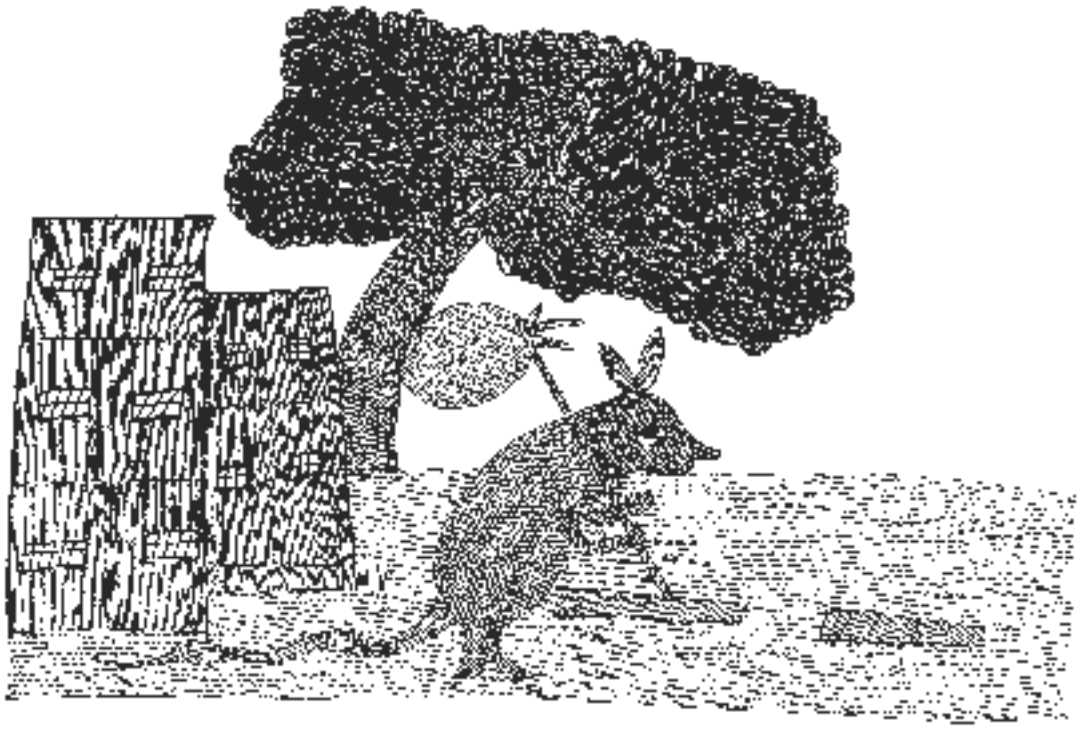

भाई। आओ और मेरा शहर देखो। तुम देखोगे कि यहाँ और वहाँ में क्या अन्तर है। हम अच्छा खाएँगे, पिएँगे। मेरे पास बड़ी आरामदेह बिल है जहाँ हम सोएँगे। मेरे साथ आओ और शहरी जीवन का मज़ा लो।"

देहाती चूहा मान गया। दोनों चूहे शहर की तरफ चल पड़े।

उन्हें घर पहुँचने में रात में काफी देर हो गई थी। उस दिन उन्होंने बड़ा अच्छा भोजन किया। मेज़ अच्छी-अच्छी खाने वाली चीज़ों से भरी थी। मेज़ के चारों तरफ लाल मखमल के गद्दे लगे हुए थे और सबकुछ आरामदायक था। शहरी चूहे ने उसे बैठने के लिए आमंत्रित किया और कहा, "मैं तुम्हारे लिए खाने की बढ़िया वस्तुएँ लाता हूँ।" उसने पनीर और रोटी का छोटा टुकड़ा, सलाद, केक, अखरोट आदि देहाती चूहे को दिए। देहाती चूहे ने खाते हुए अपने भाई के शहरी जीवन को सराहा।

अभी दोनों चूहों ने कुछ ही टुकड़े खाए थे कि दरवाज़ा खुला और घर का मालिक अन्दर घुस आया। दोनों चूहे नीचे कूद गए और डरकर मेज़ के नीचे छिप गए।

देहाती चूहा काँप रहा था। उसने किसी को कहते सुना, "इस मेज़ पर कौन था?"

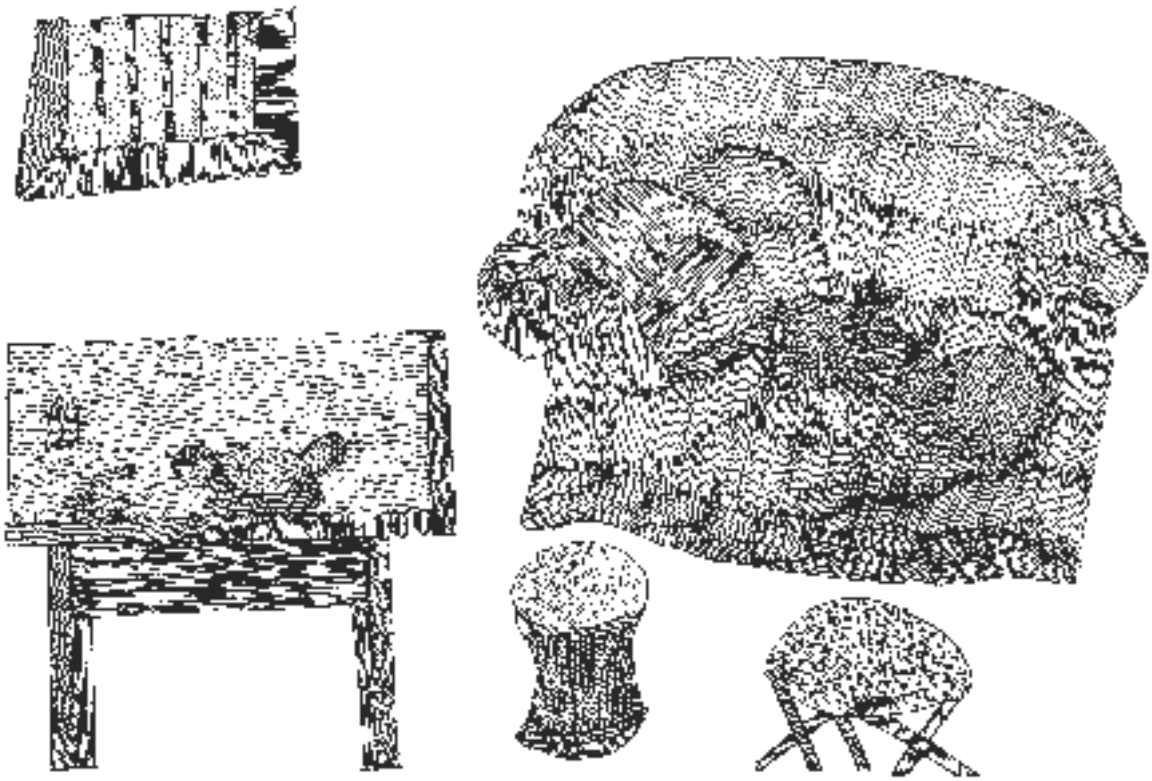

फिर किसी ने दोबारा दरवाज़ा खोला और तीन चिंघाड़ते और सूँघते हुए कुत्तों को अन्दर घुसा दिया।

"ओह, मेरे भगवान!" देहाती चूहे ने शहरी चूहे के साथ कमरे के चारों तरफ भागकर जान बचाते हुए कहा। जहाँ कहीं भी वह छिपने की कोशिश करते कुत्ते सूँघ लेते और उनकी तरफ बढ़ते। अन्त में चूहों को एक छोटा-सा छेद मिल गया जहाँ वे आराम से घुसकर बचाव कर सकते थे। वे बैठे-बैठे घबरा रहे थे क्योंकि जब भी उन्होंने भागने के लिए सिर बाहर निकाला कोई न कोई कुत्ता फिर भौंक जाता।

घण्टों बाद, जब कुत्ते और लोगों ने कमरे को छोड़ दिया तो देहाती चूहा सहमा, सूँघता बाहर आया। वह अब भी काँप रहा था। काफी देर छेद में रहने के कारण वह अकड़ गया था। हालाँकि वहाँ कोई नहीं था, देहाती चूहे ने कहा, "मुझे डर लग रहा है और मैं वापस जा रहा हूँ। तुम्हारी आवभगत का धन्यवाद। मैं महसूस करता हूँ कि अपनी फसलें, जौ, बीज और सर्दियों की ठण्डी हवाएँ तुम्हारे अच्छे खाने और आरामदायक घर से कहीं अच्छी हैं। आखिर मैं अपने देहात में शान्ति और आराम से सो तो सकता हूँ।"

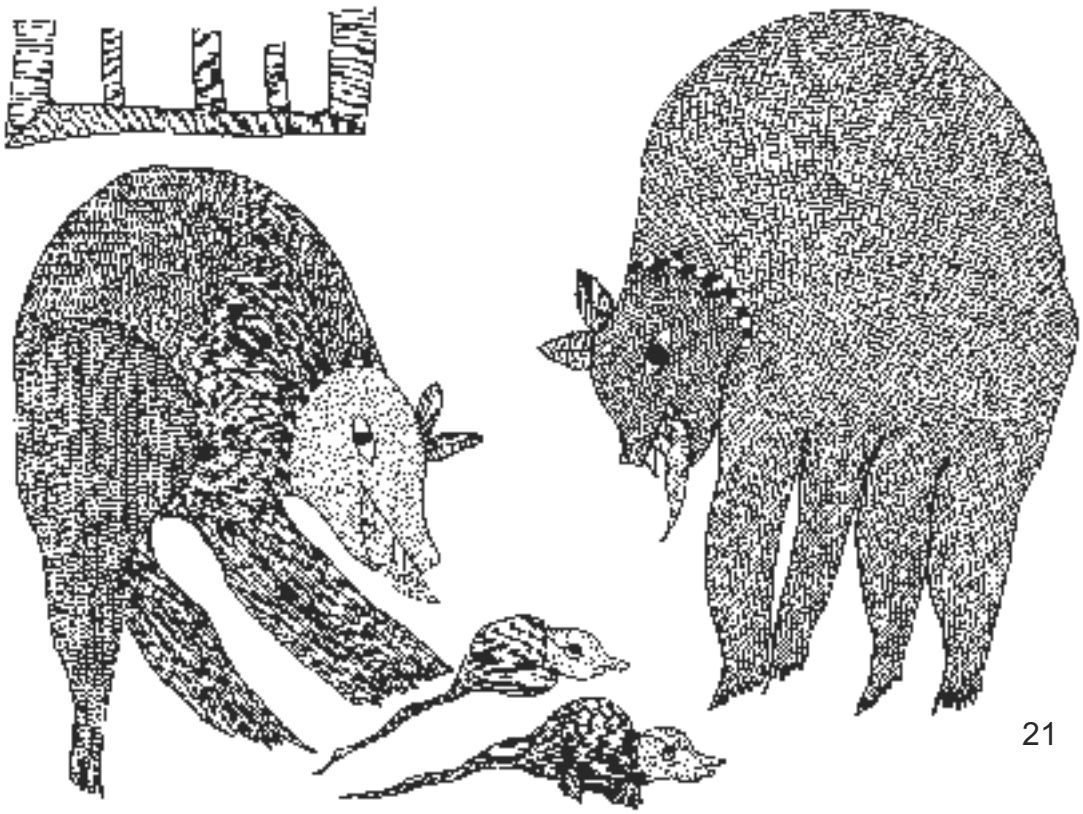

7. अक्ल बड़ी या भैंस!

एक था हाथी और एक था मगर। हाथी जंगल का राजा था और मगर नदी का राजा था। दोनों में खूब दोस्ती थी।

एक दिन दोनों मित्र नदी किनारे बैठकर अपनी-अपनी ताकत की बड़ाई कर रहे थे। उनके पास ही एक कछुआ बैठा हुआ उनकी बातें सुन रहा था। उसे न जाने क्या सूझा, वह हाथी और मगर के सामने आकर बोला, "आप दोनों जैसा बलवान सचमुच दुनिया में दूसरा नहीं है। पर क्या आप मेरे साथ एक शर्त लगाएँगे?"

इस पर दोनों खिलखिलाकर हँस उठे। हाथी ने हँसते-हँसते पूछा, "तुम मुझसे शर्त लगाओगे या मगर भाई से?"

कछुए ने कहा, "आप दोनों से ही। देखें हम तीनों में सबसे बलवान कौन है।"

हाथी और मगर को तो विश्वास ही नहीं हुआ। कछुए के सिर पर न जाने कौन-सा भूत सवार हो गया था।

पर फिर भी हाथी ने पूछा, "अच्छा तो पहले किससे शर्त लगेगी?"

कुछ देर सोचकर कछुआ बोला, "पहले हाथी भाई से।"

हाथी चिंघाड़कर बोला, "तो तैयार हो जाओ लड़ने के लिए।"

कछुए ने कहा, "मैं तो तैयार हूँ लेकिन हम कुश्ती नहीं लड़ेंगे।"

"हैं! कुश्ती नहीं लड़ोगे? तो फिर क्या करोगे?" हाथी ने पूछा।

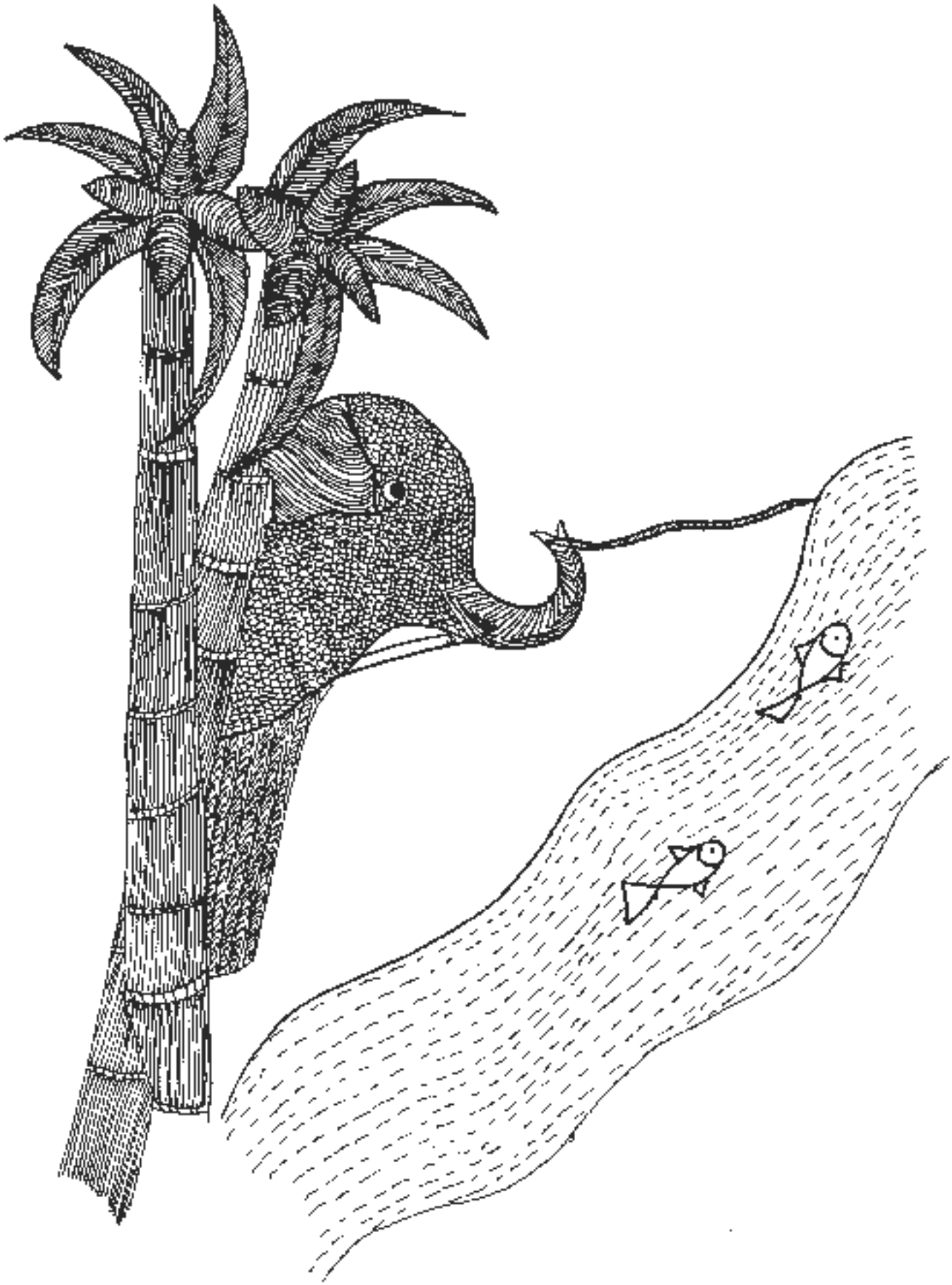

कछुए ने समझाया, "देखिए, हम दुश्मन तो हैं नहीं। न ही दुश्मनों की तरह लड़ेंगे। बस हमें तो अपनी ताकत की जाँच करनी है।"

"वह कैसे करोगे?" हाथी ने टोका।

"ऐसा करेंगे कि मैं अपने पाँव में एक रस्सी बाँधकर पानी में चला जाऊँगा और आप उस रस्सी का दूसरा छोर पकड़कर मुझे बाहर खींचेंगे। यदि आप ने मुझे खींचकर पानी से बाहर निकाल लिया तो आप जीते और मैं हारा। न निकाल सके तो मैं जीता। मंज़ूर है?" कछुआ बोला।

हाथी ने कहा, "मंज़ूर है। जा, रस्सा ले आ।"

कछुआ एक मोटा रस्सा लाया। उसने उसका एक सिरा अपने पाँव में बाँधा, और दूसरा सिरा हाथी को पकड़ाया। फिर नदी के भीतर चला गया।

नदी बड़ी गहरी थी। उसके अन्दर एक बड़ी भारी चट्टान पर कछुआ और कछुई रहते थे। कछुए ने रस्से को कसके चट्टान पर लपेट दिया और आराम से बैठ गया।

अब कछुए ने पानी से सिर बाहर निकालकर हाथी से कहा, "हाथी भाई! हाँ, खींचो।"

हाथी ने सोचा कछुए को खींचने के लिए ज़ोर लगाने की ज़रूरत ही क्या है। उसने पहले थोड़ा-सा खींचा, फिर और खींचा, फिर पूरी ताकत लगा दी पर रस्सा तो हिला ही नहीं।

अब तक वहाँ कई सारे जानवर इकट्ठा होने लगे थे। उन्हें देखकर हाथी को और गुस्सा आया। उसने इतनी ज़ोर से झटका दिया कि रस्सा खट से टूट गया और हाथी धड़ाम से गुलाँटी खाकर ज़मीन पर गिर पड़ा।

सारे पशु-पक्षी ही-ही, हा-हा, हू-हू, हँ-हँ, करके हँस पड़े। हाथी सिटपिटाकर रह गया।

अब आई मगर की बारी। वह अपने साथी की हालत देखकर गुस्से से काँप रहा था। उसने ज़ोर से कहा, "कछुए! अब मैं तेरे को मज़ा चखाकर ही रहूँगा। रस्सा ला।"

कछुए ने कहा, "जी, समझा मगर भाई। पर इस बार आप नदी में रहेंगे और मैं ज़मीन पर। मंज़ूर है न?"

"हाँ-हाँ, मैं भी यही कहने वाला था। अब जल्दी रस्सा ला।"

कछुआ एक और मोटा रस्सा ले आया। एक छोर से अपना पाँव बाँधा और दूसरा मगर को दे दिया। मगर तुरन्त अपना छोर पकड़कर धब्ब से पानी में कूद पड़ा।

इस बार कछुए और मगर का दंगल देखने के लिए सभी पानी वाले जानवर इकट्ठा हो गए। उधर हाथी अभी भी इतना गुस्सा था कि उसने ज़मीन वाले सभी जानवरों को वहाँ से भगा दिया और खुद भी वहाँ से चला गया।

कछुए ने देखा कि वहाँ कोई नहीं है तो उसने तुरन्त रस्से को एक बड़े से पेड़ के चारों ओर लपेट दिया। फिर कछुई ने जाकर ज़ोर से आवाज़ दी, "तैयार, मगर भाई, खींचो।"

अब बताओ कि आगे क्या हुआ होगा? अपनी कहानी और उसके चित्र अगले पेज पर बनाओ।